

वष्णुगढ पीपलकोटी जल वदियुत परयोजना

प्रलिमिंस के लयि:

वष्णुगढ पीपलकोटी जल वदियुत परयोजन, अलकनंदा नदी, गंगा, उत्तराखंड में जल वदियुत परयोजन, जलवायु परविरतन ।

मेन्स के लयि:

हमिलय में जलवदियुत परयोजनाओं के लयि चुनौतयिँ ।

चरचा में क्यौं?

हाल ही में वशिव बैंक उत्तराखंड में अलकनंदा नदी पर नरिमाणाधीन वष्णुगढ पीपलकोटी जल वदियुत परयोजना (Vishnugad Pipalkoti Hydro Electric Project-VPHEP) से पर्यावरणीय कषताकी जाँच करने के लयि सहमत हो गया है ।

- पैनल ने 83 स्थानीय समुदायों की शकियतों को स्वीकार करने के बाद जाँच के अनुरोध पर वचिर कयिा है ।

अलकनंदा नदी

- यह **गंगा** की प्रमुख सहायक नदयिँ में से एक है ।
- इसका उद्गम उत्तराखंड के संतोपंथ ग्लेशियर से होता है ।
- यह देवप्रयाग में भागीरथी नदी से मलिती है जसिके बाद इसे गंगा कहा जाता है ।
- इसकी मुख्य सहायक नदयिँ **मंदाकनी, नंदाकनी और पडार नदयिँ** हैं ।
- अलकनंदा प्रणाली चमोली, टहिरी और पौड़ी ज़िलों के कुछ हसिसों तक वसितुत है ।
- बद्रीनाथ का हद्वि तीरथस्थल और प्राकृतिक झरना तप्त कुंड अलकनंदा नदी के कनारे स्थति है ।
- इसके मूल में **सतोपंथ झील** त्रकिोणीय झील है जो 4402 मीटर की ऊँचाई पर स्थति है और इसका नाम हद्वि त्रमूरत भगवान ब्रह्मा, भगवान वष्णु और भगवान शवि के नाम पर रखा गया है ।
- **पंच प्रयाग:** उत्तराखंड में पाँच स्थल जहाँ **पाँच नदयिँ अलकनंदा नदी में वलीन हो जाती हैं, अंततः पवतिर नदी गंगा को पंच प्रयाग कहा जाता है (हदि में, 'पंच' का अर्थ पाँच और 'प्रयाग' का अर्थ संगम होता है) ।**
 - सबसे पहले, अलकनंदा **वष्णुप्रयाग** में धौलीगंगा नदी से मलिती है, वहीं नंदाकनी नदी से **नंदप्रयाग** और फरि पडार नदी से **कर्णप्रयाग** में मलिती है । यह **रुद्रप्रयाग** में नंदाकनी नदी के साथ मलिती है तथा देवप्रयाग पर अंतमि रूप से भागीरथी नदी में मलि जाती है ।



शिकायतें:

- परियोजना से हाट गाँव में प्राचीन लक्ष्मी नारायण मंदिर को नष्ट हो जाएगा।
 - मंदिर स्थानीय लोगों के लिये एक सांस्कृतिक स्रोत संसाधन है और उनकी आजीविका का साधन है।
- ग्रामीणों ने दावा किया कि बाँध से मलबा गरिने से मंदिर की दीवारों की वास्तुकला को खतरा है, जो एक प्राचीन वरिसत स्थल है।
 - स्थानीय लोगों ने लक्ष्मी नारायण मंदिर के साथ एक पवित्र बंधन होने का दावा किया, जिसे कथति तौर पर 19 वीं शताब्दी में **शंकराचार्य** द्वारा स्थापित किया गया था।
- नवासियों को उनके गाँव से जबरन वसिथापित किया जा रहा है।
 - कुछ स्थानीय लोग जनिहोंने मुआवजा लेने से इनकार कर दिया और दूसरी जगह चले गए, उन्हें उनके घरों से हटा दिया गया, जबकि कुछ को पुलिस ने गरिफ्तार कर लिया।
- परियोजना में जलवायु परिवर्तन और चरम मौसमी घटनाओं के कारण होने वाली आपदाओं को भी ध्यान में नहीं रखा है।
- वर्ष 2013 में केदारनाथ में बादल फटने और वर्ष 2021 की चमोली आपदा को भी नजरअंदाज कर दिया गया था।

VPHEP:

- 444-मेगावाट VPHEP का निर्माण टहिरी हाइड्रोपावर डेवलपमेंट कॉरपोरेशन द्वारा किया जा रहा है, जो आंशिक रूप से केंद्र के स्वामित्व वाला उद्यम है।
- परियोजना मुख्य रूप से विश्व बैंक द्वारा वतित पोषति है और वर्ष 2011 में स्वीकृत की गई थी।
- जलवदियुत परियोजना को 922 मिलियन अमेरिकी डॉलर की लागत से 30 जून, 2023 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।
- परियोजना उत्तराखंड के चमोली जिले के हेलंग गाँव के पास अलकनंदा नदी में एक छोटा जलाशय बनाने के लिये 65 मीटर का डायवर्जन बाँध बनाएगी।

उत्तराखंड में जल वदियुत परियोजनाएँ:

- टहिरी चरण 2: भागीरथी नदी पर 1000 मेगावाट
- तपोवन वषिणुगढ़: धौलीगंगा नदी पर 520 मेगावाट
- वषिणुगढ़ पीपलकोटी: अलकनंदा नदी पर 444 मेगावाट
- सगौली भटवारी: मंदाकनी नदी पर 99 मेगावाट
- फटा भुयांग: मंदाकनी नदी पर 76 मेगावाट
- मध्यमहेश्वर: मध्यमहेश्वर गंगा पर 15 मेगावाट
- कालीगंगा 2: कालीगंगा नदी पर 6 मेगावाट

हिमालय में जलवदियुत परियोजनाओं के विकास में वदियमान चुनौतियाँ:

- स्थरिता में कमी:
 - ग्लेशियरों के अपने स्थान से खसिकने तथा **परमाफ्रॉस्ट के पघिलने** से परवतीय ढलानों की स्थरिता में कमी आने और ग्लेशियर झीलों की संख्या एवं उनके कषेत्रफल में वृद्धि होने का अनुमान लगाया है।
- परमाफ्रॉस्ट के पघिलने से वातावरण में शक्तशाली ग्रीनहाउस गैस मीथेन उत्पन्न होती है, जो ग्लोबल वार्मिंग को और अधिक

बढ़ा देती है।

■ **जलवायु परिवर्तन:**

- जलवायु परिवर्तन ने मौसम के अनश्चिति पैटर्न से बर्फबारी और वर्षा में वृद्धि हुई है।
- बर्फ का थर्मल प्रोफाइल (Thermal Profile) बढ़ रहा है, जिसका अर्थ है कि बर्फ का तापमान जो -6 से -20°C तक होता था, अब यह घटकर -2°C हो गया है, अर्थात् अब -2°C के तापमान पर बर्फ पघिलने की प्रवृत्ति बढ़ गई।

■ **आपदाओं की बारंबारता में वृद्धि:**

- बादलों के फटने की घटनाओं में वृद्धि देखी गई है तथातीव्र वर्षा और हमिस्खलन के साथ इस क्षेत्र के निवासियों के जीवन और आजीविका की हानि का जोखिम बढ़ गया है।

आगे की राह:

- यह अनुशांसा की जाती है कि हिमालयी क्षेत्र में 2,200 मीटर की ऊँचाई से अधिक किसी भी प्रकार के जलवदियुत परियोजना का विकास नहीं किया जाना चाहिये।
- जनसंख्या वृद्धि और आवश्यक औद्योगिक और बुनियादी ढाँचे के विकास को ध्यान में रखते हुए, सरकार को जलवदियुत के विकास के संबंध में गंभीर कदम उठाना चाहिये जो अर्थव्यवस्था के सतत विकास के लिये आवश्यक है, परंतु इस विकास क्रम में पर्यावरणीय मुद्दों का समाधान भी नहिं होना चाहिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्षों के प्रश्न (PYQs):

प्रश्न. टहिरि जलवदियुत परसिर नमिनलखिति में से कसि नदी पर स्थिति है? (2008)

- (a) अलकनंदा
- (b) भागीरथी
- (c) धौलीगंगा
- (d) मंदाकनी

उत्तर: (b)

प्रश्न. तपोवन और वषिणुगढ जलवदियुत परियोजनाएँ कहाँ स्थिति हैं? (2008)

- (a) मध्य प्रदेश
- (b) उत्तर प्रदेश
- (c) उत्तराखंड
- (d) राजस्थान

उत्तर: (c)

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)